This question paper contains 4 printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **604**

Unique Paper Code : **205439** **D**

Name of the Paper : **आधुनिक भारतीय भाषा : हिंदी 'क'**

Name of the Course : **B.A. (Programme)**

Semester : **IV**

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **75**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 10+10+10=30

(क) पौधे की ऊपरी फुनगी पर मुसकराता हुआ आसमान की तरफ मुँह किए हुए यह गुलाब जो रात-भर सितारों की मुसकराहट चुपचाप पीता रहा है, यह अपने मोतियों-पाँखुरियों के होठों से जाने क्यों खिलखिलाता ही जा रहा है । जाने इसे कौन-सा रहस्य मिल गया है । और वह एक नीचे वाली टहनी में आधा झुका हुआ गुलाब, झुकी हुई पलकों-सी पाँखुरियाँ और दोहरे मखमली तार-सी उसकी डंडी, यह गुलाब जाने क्यों उदास है ? और यह दुबली-पतली लम्बी-सी नाजुक कली जो बहुत सावधानी से हरा आँचल लपेटे है और प्रथम ज्ञात-यौवना की तरह लाज में जो सिमटी तो सिमटी ही चली जा रही है, लेकिन जिसके यौवन की गुलाबी लपटें सात हरे परदों में से झलकी ही पड़ती हैं, झलकी ही पड़ती हैं ।

(ख) मेरी जिन्दगी का नरक फिर मेरे अंगों में भिदना शुरू हो गया है । तुम कहते हो कि जैसे हो निबाह करना चाहिए । तुम कहते हो कि अगर मैंने उनसे निबाह नहीं किया तो यह तुम्हारे प्यार का अपमान होगा । ठीक है, मैं अपने लिए नहीं, तुम्हारे लिए निबाह करूँगी, लेकिन मैं कैसे सँभालूँ अपने को ?. दिल और दिमाग़ बेबस हो रहे हैं, नफ़रत से मेरा खून उबला जा रहा है । कभी-कभी जब तुम्हारी सूरत सामने होती है तो जैसे अपना सुख-दुख भूल जाती हूँ, लेकिन अब तो जिन्दगी का तूफ़ान जाने कितना तेज़ होता जा रहा है कि लगता है तुम्हें भी मुझसे खींचकर अलग कर देगा ।

(ग) दिवस का अवसान समीप था ।

गगन था कुछ लोहित हो चला ।

तरु-शिखा पर थी अब राजती ।

कमलिनी-कुल-वल्लभ की प्रभा ॥

(घ) कुकभ-शोभित गोरज बीच से ।

निकलते ब्रज-वल्लभ यों लसे ।

कदन ज्यों करके दिशि कालिमा ।

विलसता नभ में नलिनीश है ॥

(ङ) शत बार धिक्कार है सहस्र बार धिक्कार है उसको जो मनसा वाचा कर्मणा किसी तरह इन कापुरुषों से डरै । लक्ष बार कोटि बार कोटि बार धिक्कार है उसको जो इन चांडालों के दमन करने में तृण मात्र भी त्रुटि करै । बायाँ पैर आगे बढ़ाकर— म्लेच्छ कुल के और उसके पक्षपातियों के सिर पर यह मेरा बायाँ पैर है जो शरीर के हज़ार टुकड़े होने तक ध्रुव की भाँति निश्चल है । जिस पामर को कुछ भी सामर्थ्य हो हटावै ।

2. 'प्रियप्रवास' की राधा आधुनिक नारी का प्रतिनिधित्व करती है', विवेचन कीजिए । 12

अथवा

'प्रियप्रवास' के काव्य-रूप पर विचार कीजिए ।

3. ''गुनाहों का देवता' प्रेम की त्रासदी का उपन्यास है'— इस कथन की समीक्षा कीजिए । 12

अथवा

'गुनाहों का देवता' उपन्यास के आधार पर सुधा के चरित्र पर प्रकाश डालिए ।

4. '' 'नीलदेवी' नाटक में राष्ट्रीय भावनाओं की अभिव्यक्ति हुई है ।'' इस कथन की मीमांसा कीजिए । 12

अथवा

रंगमंच की दृष्टि से 'नीलदेवी' नाटक की समीक्षा कीजिए ।

5. (क) मुदित गोकुल की जन-मंडली,

जब ब्रजाधिप सम्मुख जा पड़ी ।

निरखने मुख की छवि यों लगी,

तृषित-चातक ज्यों घन की घटा ॥

उपर्युक्त काव्यांश की काव्य-भाषा का वैशिष्ट्य बताइए ।

अथवा

(ख) "हाय! अब भारतवर्ष की कौन गति होगी ? अब त्रैलोक्य ललाम सुता भारत कमलिनी को यह दुष्ट यवन यथासुख दलन करेंगे । अब स्वाधीनता का सूर्य हम लोगों में फिर न प्रकाश करैगा । हाय! परमेश्वर, तू कहाँ सो रहा है । हाय! धार्मिक वीर पुरुष की यह गति !"

उपर्युक्त संवाद की नाट्य-भाषा पर विचार व्यक्त कीजिए । 9